अक्टूबर 2024 वर्ष 3, अंक 9

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.–मासिक समाचार

"हमारी प्रगति की कसौटी यह नहीं है कि जिनके पास बहुत कुछ है हम उनमें और वृद्धि कर पाते हैं या नहीं; पर यह है कि क्या हम उन लोगों की पर्याप्त सहायता कर पाते हैं जिनके पास बहुत कम है।"

– फ्रैंकलिन डेलानो रूज़वेल्ट

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई.......3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा.......7

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI).......10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड कः डी.ई.आई.

1. (विकासवादी/पुनः–विकासवादी) चेतना (डीएससी) के दयालबाग (कला) विज्ञान (और इंजीनियरिंग) पर छठा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और 47वां (इंटर) राष्ट्रीय सिस्टम सम्मेलन (एनएससी) 'सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन क्विंटएस्सेंशिअल हारमनी विथ एनवायरनमेंट' (23–25 सितंबर 2024)............... 3
2. स्प्रिंगर–नेचर इंडिया द्वारा डी.ई.आई. में बुक लॉन्च Cum प्रेज़ेन्टेशन सेरेमनी का आयोजन............................... 4
3. सामाजिक और व्यवहार विज्ञान में प्रायोगिक अनुसंधान पर पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला............................... 5
4. संकाय/कार्यालय समाचार............................... 6
5. अभियांत्रिकी संकाय............................... 6
6. विद्यालय समाचार............................... 6

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

7. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से............................... 7
8. मानव पूंजी पर कुछ विचार............................... 8
9. केंद्र से समाचार............................... 9

   आईसीटी सेंटर, स्वामी नगर, नई दिल्ली में शिक्षक दिवस समारोह मनाया गया............................... 9

खंड गः डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

10. संपादक की डेस्क से............................... 10
11. खेतों से लेकर फर्मों तकः हारवैस्टिंग के जीवन के सबक कॉर्पोरेट सफलता के लिए............................... 10

    साहिबा उम्मट
12. पारिस्थितिकी–आध्यात्मिकता............................... 11

    डॉ. पंटुला वेंकटनागा श्रीनिजा
13. प्रकृति की विपुलता – फसल कटाई का समय' – एक कविता............................... 12

    प्रिया सिंह
14. कौशल संसाधन केंद्र में सम्मान कार्यक्रमः एक रिपोर्ट............................... 13

    प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड............................... 14

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

(विकासवादी/पुनः–विकासवादी) चेतना (डीएससी) के दयालबाग (कला) विज्ञान (और इंजीनियरिंग) पर छठा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और

47वां (इंटर) राष्ट्रीय सिस्टम सम्मेलन (एनएससी) 'सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन क्विंटएस्सेंशिअल हारमनी विथ एनवायरनमेंट' (23–25 सितंबर 2024)

दयालबाग (कला) विज्ञान (और अभियांत्रिकी) पर छठा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और (विकासवादी/पुनः–विकासवादी) चेतना (डीएससी) का 47वां (इंटर) राष्ट्रीय प्रणाली सम्मेलन (एनएससी): 'सिस्टम्स फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन क्विंटएस्सेंशिअल हारमनी विथ एनवायरनमेंट', 23 सितंबर 2024 को हाइब्रिड मोड में आरम्भ हुआ। डीएससी 2024 का आयोजन सात विश्वविद्यालयों के एक संघ द्वारा किया गया था, जिसमें दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) (डीईआई), दयालबाग, आगरा–282005, यूपी, भारत, कील यूनिवर्सिटी (सीएयू), जर्मनी, बर्मिंघम विश्वविद्यालय, यूके, कनाडा में वाटरलू विश्वविद्यालय, ओन्टारियो, कनाडा में वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, वैंकूवर, कनाडा में ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, और एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए शामिल थे। एनएससी का आयोजन दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा, भारत द्वारा सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया (एसएसआइ) के सहयोग से किया गया था। दोनों सम्मेलनों में श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सत्संगी साहब मुख्य संरक्षक थे।

उद्घाटन भाषण प्रो. सी. पटवर्धन, कार्यवाहक निदेशक, डीईआई द्वारा दिया गया और प्रो. सरूप रानी माथुर, एरिज़ोना स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने सत्र की अध्यक्षता की। इसके बाद अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (डीईआई के लिए प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय), दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी),आगरा–282005, उत्तर प्रदेश, भारत से श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सत्संगी साहब द्वारा vision talk प्रस्तुत की गई। vision talk 'पॉवर लॉ ऑफ मेडिटेशनल कॉन्शसनैस : इंटीग्रेटिंग स्टिमुलस एंड सेंसेशन' से संबंधित था, जिसमें 'कॉस्मिक डोमेन के लिए अल्पविकसित मॉडलिंग फ्रेमवर्क' को आईएसएम मॉडल के साथ चित्रित किया गया था। व्याख्यान में 'सुरत' शब्द योग के ध्यान अभ्यास के दौरान अल्ट्रा–ट्रान्सेंडैंटल रेफरेंशियल प्वॉइंट्स के संदर्भ में मस्तिष्क के छिद्रों का आरेखीय प्रतिनिधित्व' भी शामिल किया गया था। प्रोफेसर आनंद श्रीवास्तव, कील विश्वविद्यालय, जर्मनी ने सत्र की अध्यक्षता की। पूर्वाह्न सत्र में, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत की वरिष्ठ प्रोफेसर और पूर्व निदेशक प्रोफेसर पम्मी दुआ द्वारा डीएससी का मुख्य भाषण दिया गया। उन्होंने 'लाइफ स्टाइल फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंटः इनसाइट्स फॉर द दयालबाग मॉडल' विषय पर बात की। इसके बाद प्रोफेसर आदितेश्वर सेठ, आईआईटी दिल्ली, नई दिल्ली, भारत द्वारा 'Initial Attempts at a Systems-based Modeling of Watersheds Using Remote Sensing Data' विषय पर और भारतीय संस्थान विज्ञान विभाग, बेंगलुरु, भारत के प्रोफेसर शलभ भटनागर द्वारा एनएससी में 'An Introduction to Reinforcement Learning' विषय पर वार्ता प्रस्तुत की गई।

सम्मेलन के दोपहर के सत्र में डॉ. दयाल प्यारी श्रीवास्तव, डीईआई द्वारा 'Consciousness as a Quantum Phenomenon' विषय पर आमंत्रित व्याख्यान शामिल था, जिसके पश्चात श्रीमती प्रेम प्यारी दयाल, डीईआई द्वारा आमंत्रित व्याख्यान दिया गया, जिसका शीर्षक था, 'Karmas and the Necessity of the Sant Satguru of the Time to Attain Salvation'। साथ ही डॉ. बानी दयाल धीर, डीईआई द्वारा 'टुवर्ड्स टू लिबरेशन : एन एनालिसिस ऑफ हुजूर साहब जी महाराज्स प्ले स्वराज्य' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर एंड्रयू डेविस, एडवर्ड कैडबरी सेंटर, बर्मिंघम विश्वविद्यालय, बर्मिंघम, यूके ने की। दिन का समापन दो डीएससी मुख्य वार्ताओं के साथ हुआ। पहला व्याख्यान प्रोफेसर एंड्रयू डेविस, एडवर्ड कैडबरी सेंटर, बर्मिंघम विश्वविद्यालय, बर्मिंघम, यूके और डॉ. जूही गुप्ता, बर्मिंघम विश्वविद्यालय, यूके और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, यूपी, भारत द्वारा प्रोफेसर सी. वसंत लक्ष्मी, डीईआई की अध्यक्षता में 'द रोल ऑफ Women इन कॉन्शसनैस स्टडीज़' विषय पर दिया गया। दूसरा मुख्य भाषण

प्रोफेसर जॉय सेन, आईआईटी खड़गपुर, वास्तुकला और क्षेत्रीय योजना विभाग, मिदनापुर सदर, भारत द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने प्रोफेसर सुखदेव रॉय, डीईआई की अध्यक्षता में 'साइंस ऑफ कंट्रोल्स एंड कम्युनिकेशन इन कॉन्शसनैस स्टडीज़ः की इनपुट्स फ्रॉम साइबरनेटिक्स एंड सिस्टम थिंकिंग' विषय पर विचार–विमर्श किया।

दूसरे दिन की शुरुआत कोलंबिया यूनिवर्सिटी, न्यूयॉर्क, यूएसए के प्रोफेसर एमी चैपमैन के मुख्य भाषण से हुई। उन्होंने प्रोफेसर सरूप रानी माथुर के अध्यक्षीय सत्र में 'स्प्रिचुअलिटी माइंड बॉडी क्लस्टरः नर्चुरिंग स्प्रिचुअलिटी इन एडोलेसेंट्स एंड इमर्जिंग एडल्ट्स फॉर मेंटल हेल्थ एंड वेल बींग' विषय पर बात की। इसके बाद हुए 'डीएससी यंग रिसर्चर्स फोरम' के दौरान ज़ूम के माध्यम से दो आमंत्रित वार्ताएँ आयोजित की गईं। कोलंबिया विश्वविद्यालय के इरविंग मेडिकल सेंटर से डॉ. अमी कुमार ने 'फिज़ियोलॉजिकल बायोमार्कर्स फॉर कोगनिटिव डिसफंक्शन इन न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर' विषय पर अपनी चर्चा प्रस्तुत की, जबकि जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से डॉ. अपूर्व रतन मूर्ति ने 'टुवर्ड्स द साइंटिफिक स्टडी ऑफ ह्यूमन सब्जेक्टिव एक्सपीरियंस' विषय पर चर्चा की। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) के प्रोफेसर गुरसरन ने इस सत्र में अध्यक्ष के रूप में योगदान दिया। तत्पश्चात डीईआई और दयालबाग के इकोविलेज का एक निर्देशित दौरा आयोजित किया गया, जिससे प्रतिभागी इसकी स्थायी पहल से प्रभावित हुए। दोपहर के सत्र में दक्षिणी इंडियाना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रोक्को गेनारो द्वारा 'बुद्धिस्ट एलिमिनेटिविस्म' पर एक और मुख्य भाषण दिया गया, जिसकी अध्यक्षता दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर पम्मी दुआ ने की। बाद के 'डीएससी यंग रिसर्चर फोरम' सत्र में, आईआईटी दिल्ली के डॉ. आरत कालरा ने 'ट्रिपल एनर्जी माइग्रेशन इन द साइटोस्केलेटन' पर एक व्याख्यान दिया। इसके बाद जर्मनी के कील विश्वविद्यालय से मेलिना सीडेल ने 'Seeing द ब्रेन थिंक' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

दिन में 'ऊर्जा और पर्यावरण प्रणाली' और 'कृषि, डेयरी और स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली' पर प्रस्तुतियां भी शामिल थीं। इसके बाद एक पोस्टर सत्र और डीईआई से प्रोफेसर सोना आहूजा की अध्यक्षता में कई वार्ताएँ हुईं। शाम के दौरान मुख्य भाषण में 'डायरेक्शन एंड लेंग्थ ऑफ द एरो ऑफ टाइम' पर कील विश्वविद्यालय के प्रो. वोल्फगैंग जे. डुशल की प्रस्तुतियाँ और 'नादब्रह्म, नादयोग, नादोपासना–साउंड एस कॉनटेम्पलेशन ऑफ गॉड' पर जर्मन–भारतीय सोसायटी के हर्बर्ट लैंग की प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। दिन के अंतिम सत्र में चेतना और मस्तिष्क कार्य से संबंधित विषयों पर वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, कनाडा से प्रो. एड्रियन ओवेन और प्रो. याल्डा मोहसेनजादेह और जर्मनी की कील यूनिवर्सिटी से प्रो. अन्ना मारग्रेटा होरात्सचेक की बातचीत हुई।

सम्मेलन के अंतिम दिन की शुरुआत 'शिक्षा, साहित्यिक और सामाजिक प्रणालियों' और 'सूचना और संचार प्रणालियों' पर एनएससी द्वारा योगदान की गई। मौखिक वार्ता दो सत्रों के साथ हुई, जिसके बाद डीईआई के प्रोफेसर सुखदेव रॉय ने 'कंट्रोलिंग द माइंड, ब्रेन,एंड हार्ट विथ लाइट एंड साउंडः ईस्टर्न एंड वेस्टर्न पर्सपेक्टिव्स' विषय पर मुख्य भाषण दिया। डीएससी यंग रिसर्चर फोरम में, डीईआई के डॉ. शिरोमन प्रकाश ने वैज्ञानिक आख्यानों में चेतना को एकीकृत करने के लिए आवश्यक दार्शनिक सिद्धांतों की खोज करते हुए 'Consciousness and Contextuality' पर चर्चा की। इसके बाद दिन भर अभिनंदन समारोह जारी रहा, जहां विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ मौखिक और पोस्टर पेपर के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

सम्मेलन का समापन ''सतत विकास के लिए विकासवादी/पुनः–विकासवादी चेतना की कला, विज्ञान और इंजीनियरिंग'' विषय पर एक पैनल चर्चा के साथ हुआ। इसने इस बात पर प्रकाश डाला कि पर्यावरण के साथ सर्वोत्कृष्ट सामंजस्य में सतत् विकास जलवायु परिवर्तन, संसाधन की कमी और सामाजिक असमानताओं जैसी जटिल वैश्विक चुनौतियों को समझने और संबोधित करने में सिस्टम की वैचारिकता महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है। मानव और पर्यावरण प्रणालियों के अंतर्संबंध पर ध्यान केंद्रित करके, पैनल चर्चा ने स्थिरता के लिए समग्र दृष्टिकोण को प्रेरित करने का प्रयास किया। चर्चा में भारत और विदेश के विशेषज्ञ शामिल थे, जिनमें डीईआई और रा धा स्वा आ मी सत्संग सभा, दयालबाग के अध्यक्ष श्री गुर सरूप सूद, कील विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आनंद श्रीवास्तव, कृषि पारिस्थितिकी–सह सटीक कृषि, दयालबाग, विभाग के सलाहकार प्रोफेसर एसएस भोजवानी और प्रो. सी. पटवर्धन, कार्यवाहक निदेशक, डीईआई, सहित अन्य विद्वान् भी शामिल थे। कार्यक्रम का समापन दयालबाग के सुपरह्यूमन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ, जिसके बाद समापन टिप्पणियाँ, धन्यवाद ज्ञापन और संस्थान गीत प्रस्तुत किए गये।

स्प्रिंगर–नेचर इंडिया द्वारा डी.ई.आई. में बुक लॉन्च Cum प्रेजेन्टेशन सेरेमनी का आयोजन

स्प्रिंगर–नेचर इंडिया, एक जर्मन–ब्रिटिश शैक्षणिक प्रकाशन कंपनी, ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के सहयोग से, 19 सितंबर 2024 को अपना 30–दिवसीय शोध भ्रमण प्रारम्भ किया, जो देश भर के शैक्षणिक संस्थानों में रुका। शोध अखंडता, सतत विकास लक्ष्यों और अनुसंधान में समानता पर ध्यान केंद्रित करते हुए 9 राज्यों के 17 शहरों का भ्रमण करने के उद्देश्य से, यह 25 सितंबर 2024 को दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में रुका। इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण, कॉन्शसनैस स्टडीज़ इन साइंस एण्ड ह्यूमेनिटीज ईस्टर्न एण्ड वेस्टर्न पर्सपैक्टिव नामक पुस्तक के विशेष भारत संस्करण का विमोचन था। पुस्तक के सम्मानित संपादकों में परम श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (एक गैर–सांविधिक–निकाय, जो दयालबाग शैक्षणिक संस्थानों के लिए प्रबुद्ध विचार मण्डल के रूप में कार्यरत हैं), प्रो. अन्ना मार्गरेटा होरात्शेक, पूर्व निदेशक, अंग्रेजी विभाग, कील विश्वविद्यालय, जर्मनी और प्रो. आनंद श्रीवास्तव, गणित और प्राकृतिक विज्ञान संकाय, कील विश्वविद्यालय, जर्मनी के असीम योगदान को मान्यता देते हुए आयोजकों ने उनमें से प्रत्येक को एक प्रशस्ति पत्र और एक शॉल भेंट करके सम्मानित किया। पुस्तक पूर्व के आध्यात्मिक दर्शन को वैज्ञानिक रूप से स्वीकृत घटना विज्ञान के साथ एकीकृत करने की दिशा में एक और बड़ा कदम है, जिससे एक पूर्ण और व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत होता है। इस पुस्तक का अंतर्राष्ट्रीय संस्करण इस वर्ष की शुरुआत में बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर लॉन्च किया गया था।

26 नवंबर 2020 को आयोजित स्पीहा ग्लोबल वेबिनार सिरीज के उद्घाटन वेबिनार में श्रध्येय सतसंगी साहब ने भाग लिया और श्री जी.एस. सूद, अध्यक्ष, डी.ई.आई और रा धा स्व आ मी सत्संग सभा, दयालबाग, श्री वेंकटेश सर्वसिद्धि, स्प्रिंगर नेचर इंडिया के प्रबंध निदेशक, प्रो. सी. पटवर्धन, कार्यवाहक निदेशक,डी.ई.आई और श्री निक कैंपबेल, स्प्रिंगर नेचर में अकादमिक मामलों के उपाध्यक्ष जैसे गणमान्य लोगों द्वारा आमंत्रित वार्ता की गई। इस अवसर पर डी.ई.आई की दस युवा महिला शोधकर्ताओं, भक्ति प्रसाद, नीतू चौधरी, कैरोल सिंह, हिमानी परिहार, सुरभि शर्मा, विधि गुप्ता, स्वेता राणा, गुंजन, शिवानी शर्मा और स्वाति सत्संगी को भी उनके संबंधित क्षेत्रों में शोध में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सामाजिक और व्यवहार विज्ञान में प्रायोगिक अनुसंधान पर पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

भारतीय विश्वविद्यालय संघ–दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और प्रशासनिक विकास केंद्र (एआईयू–डीईआई–एएडीसी) ने शिक्षा संकाय, डी.ई.आई के सहयोग से 19 से 23 सितंबर 2024 तक सामाजिक और व्यवहार विज्ञान में प्रायोगिक अनुसंधान पर पंचदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कठोर प्रायोगिक अनुसंधान करने के लिए आवश्यक पद्धतियों, तकनीकों और नैतिक विचारों की गहरी समझ देना है। इसे प्रायोगिक अनुसंधान में व्यापक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल प्रदान करने के लिए तैयार किया गया था। पाठ्यक्रम की सामग्री व्यापक थी, जिसमें बारह विषय विशेषज्ञों के नेतृत्व में दस विशेष रूप से तैयार किए गए सत्र शामिल थे। मिश्रित मोड में आयोजित कार्यशाला में विभिन्न स्थानों से कुल 107 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता प्रदान की ।

कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में एआईयू–डीईआई–एएडीसी की नोडल अधिकारी प्रो.ज्योति गोगिया ने एएडीसी और इसके कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रदान किया। कार्यशाला के संयोजक प्रो.एन पी एस चंदेल ने इसके उद्देश्यों को रेखांकित किया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि डी.ई.आई के कार्यवाहक निदेशक प्रो.सी. पटवर्धन थे। उन्होंने दुनिया की तीव्र गति के साथ तालमेल बिठाने के लिए अनुसंधान में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के महत्व पर जोर दिया। डॉ अनूप कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, बायोस्टैटिस्टिक्स और स्वास्थ्य सूचना विज्ञान विभाग, संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने प्रायोगिक अनुसंधान का संक्षिप्त परिचय दिया। उद्घाटन सत्र का संचालन कार्यशाला की सह संयोजक डॉ.शालिनी वर्मा ने किया।

कार्यशाला में कुशल विषय विशेषज्ञों के एक समूह का प्रदर्शन किया गया, जिसमें श्रद्धा शर्मा, पंडित दीनदयाल एनर्जी यूनिवर्सिटी, गांधी नगर, गुजरात,इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, सेंटर फॉर डिस्टेंस लर्निंग, गाजियाबाद से डॉ.कीर्ति जैन, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से प्रो. अशोक के. श्रीवास्तव, पूर्व प्रोफेसर एवं प्रमुख, अनुसंधान प्रभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, प्रो. कमलजीत संधू, प्रो. सोना आहूजा, प्रो. सुनीता मल्होत्रा, डॉ. ए.पी. त्यागी, प्रो एन.पी.एस. चंदेल, प्रो. नंदिता सत्संगी, प्रो. सविता श्रीवास्तव, प्रो. मीनू सिंह, प्रो. पी.एस. त्यागी, प्रो. लाजवंती, डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. जे.एल. सिंह और डॉ. आरती सिंह ने सत्राध्यक्षता की।

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र की मानद निदेशक और जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली में शिक्षक प्रशिक्षण और गैर–औपचारिक शिक्षा विभाग में प्रोफेसर प्रो. वीरा गुप्ता ने समापन भाषण दिया। डॉ. शालिनी वर्मा ने कार्यशाला रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यशाला को प्रतिभागियों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली।

संकाय/कार्यालय समाचार

प्रोफेसर आनंद मोहन, कुलसचिव, डी.ई.आई को 6 अक्टूबर 2024 को 'भूविज्ञान दिवस समारोह' के दौरान भूविज्ञान विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इसके प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों में से एक, और एक वैज्ञानिक के रूप में भूविज्ञान, पेट्रोलॉजी और खनिज विज्ञान में बेहतरीन योगदानकर्ता प्रोफेसर आनंद मोहन को एक शॉल, एक प्रशस्ति पत्र और एक स्मृति चिह्न प्रदान किया गया।

प्रोफेसर अरविंद एम. कायस्थ, Governing Body के सदस्य, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (मानित विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा–282005, और वरिष्ठ प्रोफेसर, स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय को प्रोफेसर की उपाधि से सम्मानित किया गया। 5 अक्टूबर 2024 को आईआईएससी बैंगलोर में भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के पूर्व छात्र संघ की ओर से एन. अप्पाजी राव बेस्ट मेंटर अवार्ड 2024 प्रदान किया गया। इसमें जैविक विज्ञान के एक वैज्ञानिक को हर तीन साल में बार नकद पुरस्कार और एक प्रशस्ति पत्र दिया जाता है, जिसने कई युवाओं को प्रतिष्ठित और नेतृत्व की स्थिति प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन दिया है।

अभियांत्रिकी संकाय

डी.ई.आई के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. ए. चरण कुमारी को 1 अक्टूबर 2024 को भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), नोएडा शाखा कार्यालय द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित हितधारक सम्मेलन में अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम रेडिसन, आगरा में आयोजित किया गया था, और सरकारी निकायों, उद्योग, गैर सरकारी संगठनों और शैक्षणिक संस्थानों के प्रमुख प्रतिभागियों को स्थिरता और नवाचार में महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने के लिए एक साथ लाया गया था। डॉ. चरण कुमारी की प्रस्तुति, जिसका शीर्षक है ''एआई, एसडीजी 9 एण्ड बीआईएस स्टैण्डर्सः ड्राइविंग इनोवेशन एंड सस्टेनबल डेवलपमेंट इन इंडियन इंडस्ट्री'', जो 'यूनाइटेड नेशंस' सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल (एसडीजी) 9 को प्राप्त करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की महत्वपूर्ण भूमिका पर केंद्रित है।

विद्यालय समाचार

डी.ई.आई रा धा स्व आ मी सरन आश्रम नगर स्कूल, दयालबाग के शिक्षण संकाय सदस्यों में से एक श्रीमती शेरी अरोड़ा के समन्वयन द्वारा तीसरी से पांचवीं कक्षा के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 'इंग्लिश हैंडराइटिंग इम्प्रूवमेंट वर्कशॉप' 6 से 30 सितंबर, 2024 तक आयोजित की गई थी, इसके बाद 3 से 5 अक्टूबर, 2024 तक तीन दिवसीय 'फन विद स्पेलिंग रूल्स वर्कशॉप' आयोजित की गई, जिसमें प्रत्येक में 34 प्रतिभागी सम्मिलित थे। दोनों कार्यशालाओं ने नवीन तकनीकों के माध्यम से कर्सिव लेखन और वर्तनी में निपुणता को बढ़ावा दिया।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

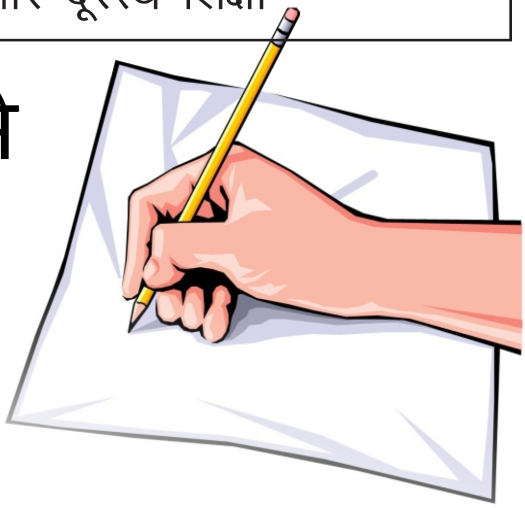

मुझे अच्छी तरह याद है कि वर्ष 2013 में दीपावली के दिन राधा नगर के पास सुबह के फील्ड वर्क के दौरान अपने संबोधन में परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब ने निर्देश दिया था कि अब से दीपावली दिवस को डी.ई.आई. द्वारा 'मूल्यों और गुणवत्ता दिवस' के रूप में मनाया जाना चाहिए। एक साल बाद, हमने अक्टूबर 2014 के अपने न्यूज़लैटर में बताया कि भारत और विदेश में हमारे कई केंद्र ई–ट्रांसमिशन के माध्यम से डी.ई.आई. से जुड़े और उत्सव का हिस्सा बने। उस अवसर पर, मैंने अपने कॉलम में लिखा था:

दयालबाग (जो अपनी स्थापना के 100वें वर्ष का जश्न मना रहा है) की तर्ज पर 23 अक्टूबर, 2014 को मूल्य दिवस के रूप में मनाने के हमारे आह्वान पर अध्ययन केंद्रों ने जिस उत्साह के साथ प्रतिक्रिया दी, वह बहुत स्वागत योग्य है। यह शायद आंतरिक दीपों को जलाने का एक अच्छा तरीका है जो अन्यथा निष्क्रिय हो जाते हैं। इस युग और समय में, समय की मांग है कि मूल्यों को न केवल आत्मसात किया जाए और उनका अभ्यास किया जाए बल्कि उनके बारे में बात की जाए और उन्हें चारों ओर फैलाया जाए।

वर्ष 2020 में कोरोना वायरस महामारी के समय, Gracious हुजूर ने निर्देश दिया कि इस आयोजन का नाम बदलकर 'नवाचार, गुणवत्ता और मूल्यांकन दिवस' रखा जाए और इस वर्ष यह दीपावली पर 31 अक्टूबर, 2024 को मनाया गया। अब मैं इन तीन attributes पर संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत करूंगा।

<u>नवाचार</u>

शैक्षणिक क्षेत्र में, कई नवीन सुविधाएँ शुरू की गई हैं। शिक्षा का मिश्रित तरीका, जो ई–शिक्षा को आमने–सामने (face-to-face) के सत्रों के साथ जोड़ता है, जो हमारी शिक्षा प्रक्रिया का एक आंतरिक हिस्सा है, डीईआई के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के संस्थापक पिता, प्रो. पी.एस. सत्संगी साहब की दूरदर्शिता को दर्शाता है। उनके कहने पर उठाए गए कई कदम, जैसे कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को एनसीवीटी (आईटीआई) पाठ्यक्रमों के साथ संरेखित करना, प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों का मॉड्यूलरीकरण, दैनिक गृह असाइनमेंट प्रणाली, दोहरे प्रमाणपत्र कार्यक्रम, और कई अन्य सभी बेहद अभिनव हैं। हम 1 वर्ष के बाद exit करने के विकल्प के साथ 2–वर्षीय वायरमैन और इलेक्ट्रीशियन पाठ्यक्रम चलाते हैं। हम ऑन–कैंपस डिप्लोमा कार्यक्रमों में दूरस्थ शिक्षा प्रमाणपत्र स्तर के छात्रों को पार्श्व प्रवेश की अनुमति देते हैं। विश्वविद्यालय स्तर के कार्यक्रमों में हमारे दूरस्थ छात्र निदेशक के पदक और अन्य पुरस्कारों के लिए ऑन–कैंपस छात्रों के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। हाल ही में शुरू की गई ओपन बुक परीक्षा नवाचार का एक और उदाहरण है।

<u>उच्च गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री</u>

दूरस्थ शिक्षा पद्धति में कार्यक्रम प्रदान करने के लिए किसी संस्थान की मान्यता के लिए एक आवश्यकता यह थी कि मुद्रित अध्ययन सामग्री स्व–शिक्षण प्रारूप में होगी, जैसा कि इग्नू द्वारा निर्धारित किया गया था।

तदनुसार, 26–28 नवंबर, 2006 को डीईआई में ''स्व–निर्देशन प्रिंट सामग्री (सिम) के विकास'' पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें स्टाफ ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन (स्ट्राइड), इग्नू, नई दिल्ली के दो संसाधन व्यक्तियों ने इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर सेमिनारों की एक श्रृंखला दी। डीईआई और विभिन्न टीमों से 100 से अधिक प्रतिभागियों ने, जिन्होंने अध्ययन केंद्रों में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों के लिए अध्ययन सामग्री विकसित की थी और साथ ही भविष्य के लिए नियोजित पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम सामग्री विकसित करने में शामिल लोगों ने कार्यशाला में भाग लिया।

सामग्री को निम्नलिखित विशेषताओं के साथ तैयार करने का ध्यान रखा गया है:

- वे सरल, समझने में आसान शैली और भाषा में लिखे गए हैं
- प्रारूप स्व–शिक्षण के लिए डिजाइन किया गया है
- सामग्री अत्यधिक केंद्रित है और निर्धारित पाठ्यक्रम से विचलित नहीं होती है
- उनमें अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर शामिल हैं।

मूल्य आधारित शिक्षा

अपनी स्थापना के समय से ही, डी.ई.आई. ने छात्रों में मूल्यों के समावेश पर ध्यान दिया है। डी.ई.आई. की विशाल संरचना, आदरणीय डॉ. एम.बी. लाल साहब द्वारा तैयार की गई डी.ई.आई. शिक्षा नीति द्वारा प्रदान किए गए नवाचार की आधारशिला पर खड़ी है। आदरणीय प्रो. पी. एस. सत्संगी साहब ने व्याख्यात्मक संरचनात्मक मॉडल का उपयोग करके दिखाया कि मूल्यों के 93 तत्व हैं और यह उल्लेखनीय है कि एन. ई.पी. 2020 दस्तावेज में निर्दिष्ट मूल्य अधिकांशतः डी.ई.आई. शिक्षा नीति में मौजूद हैं, लेकिन यह भी बताया गया है कि उचित लक्ष्यों और उद्देश्यों, शिक्षा प्रणाली और संगठनात्मक नीतियों की मदद से इन्हें कैसे विकसित तथा आत्मसात किया जाता है।

अक्सर कहा जाता है कि भारत युवाओं का देश है क्योंकि यहाँ की 50% आबादी 25 वर्ष से कम आयु की है और इसे अक्सर जनसांख्यिकीय लाभांश के रूप में संदर्भित किया जाता है। हालाँकि, यह कहना उचित होगा कि जनसांख्यिकीय लाभांश का अनुमान लगाने के लिए, एक अधिक यथार्थवादी पैरामीटर शायद वह होगा जो मानव पूंजी सूचकांक को सामान्यीकरण कारक के रूप में उपयोग में लाता है।

मैं परम पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब की निम्नलिखित टिप्पणी के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूँगाः *दयालबाग द्वारा की जाने वाली प्राथमिक गतिविधियों में, आध्यात्मिकता, शिक्षा, कृषि और स्वास्थ्य सेवा को हम पर्यावरण के प्रति अपनी चिंता के साथ शामिल कर सकते हैं। इसके अलावा, यहाँ हम जो शिक्षा प्रदान करते हैं, वह मूल्य-आधारित होने के कारण अन्य जगहों की शिक्षा से अलग है।*

उपरोक्त उद्धरण में दिखाई देने वाली प्रत्येक गतिविधि मानव पूंजी सूचकांक में वृद्धि करती है और इन तत्वों को आत्मसात करने वाली युवा आबादी का संचयी योगदान सही मायने में जनसांख्यिकीय लाभांश में वृद्धि करता है। इन विशेषताओं के बिना, विशाल युवा आबादी एक जनसांख्यिकीय आपदा साबित हो सकती है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

मानव पूंजी पर कुछ विचार

वर्ष 1700 के दशक में, स्कॉटिश अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने लिखा था, ''शिक्षा, अध्ययन या प्रशिक्षुता के दौरान ....प्रतिभाओं के अधिग्रहण में एक वास्तविक व्यय होता है, जो एक व्यक्ति में पूंजी है। वे प्रतिभाएँ उसके भाग्य का हिस्सा हैं, और इसी तरह समाज का भी।'' मानव पूंजी का यह वर्णन 2024 में भी सत्य है।

विकिपीडिया के अनुसार, मानव पूंजी, व्यापक अर्थ में, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से मौजूद सभी ज्ञान, कौशल, योग्यता, अनुभव, बुद्धि, प्रशिक्षण और दक्षताओं का संग्रह है। मानव पूंजी को मापने के लिए कई तरीके हैं। दशकों से अध्ययनों में मानव पूंजी के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में स्कूली शिक्षा के उपायों का उपयोग किया गया है। यह इस धारणा पर आधारित है कि स्कूल में होना सीखने के बराबर है। कई अध्ययनों से निकले सबूत बताते हैं कि अक्सर ऐसा नहीं होता है। कई सिद्धांत स्पष्ट रूप से मानव पूंजी विकास में निवेश को शिक्षा से जोड़ते हैं, और आर्थिक विकास, उत्पादकता, विकास और नवाचार में मानव पूंजी की भूमिका को अक्सर शिक्षा और नौकरी कौशल प्रशिक्षण के लिए सरकारी सब्सिडी के औचित्य के रूप में उद्धृत किया जाता है।

15 मार्च 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया में बताया गया है कि "...नवीनतम यूएनडीपी के मानव विकास सूचकांक के अनुसार 2022 में 193 देशों की सूची में भारत 134 वें स्थान पर है, यह आगे बताया गया है कि भारत में यूएनडीपी के निवासी प्रतिनिधि ने निम्नलिखित बयान जारी किया थाः '' भारत ने पिछले कुछ वर्षों में मानव विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। 1990 के बाद से, जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में 9.1 वर्ष की वृद्धि हुई है; स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्षों में 4.6 वर्ष की वृद्धि हुई है, और स्कूली शिक्षा के औसत वर्षों में 3.8 वर्ष की वृद्धि हुई है। भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय में लगभग 287% की वृद्धि हुई है।''

स्कूली शिक्षा के वर्ष और स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता मानव पूंजी का आकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पृष्ठभूमि में, यह याद किया जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों ने वर्ष 2015 में बैठक की और गरीबी को समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने और वर्ष 2030 तक सभी लोगों को शांति और समृद्धि का आनंद सुनिश्चित करने के लिए कार्रवाई के सार्वभौमिक आह्वान के रूप में 17 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को अपनाया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रत्येक एसडी लक्ष्य के लिए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में हुई प्रगति की मध्यावधि समीक्षा वैश्विक स्तर पर की गई थी।

लक्ष्य संख्या 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से संबंधित है। इस लक्ष्य के विभिन्न घटकों द्वारा 2025 के बेंचमार्क को प्राप्त करने में हुई प्रगति का आकलन करने के लिए हाल ही में एक समीक्षा की गई है। यूनेस्को द्वारा प्रकाशित विस्तृत स्कोरकार्ड भारत के लिए प्रगति की निम्नलिखित स्थिति दर्शाता हैः

(i.) प्राथमिक शिक्षा से एक वर्ष पहले संगठित शिक्षा में भागीदारी दर – लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर
(ii.) प्रशिक्षित शिक्षक – पूर्व–प्राथमिक – तीव्र प्रगति
(iii.) पूर्णता दर में लैंगिक अंतर पर काबू पाना – तीव्र प्रगति

(iv.) स्कूल इंटरनेट कनेक्टिविटी – औसत प्रगति
(v.) स्कूल से बाहर रहने वालों की दर – निम्न माध्यमिक – धीमी प्रगति
(vi.) पूर्णता दर – उच्चतर माध्यमिक – धीमी प्रगति
जिन दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रगति धीमी है, उनसे संबंधित कुछ प्रासंगिक आंकड़े नीचे प्रस्तुत हैं:

- कक्षा 10:
  2021–22 में स्कूल छोड़ने की दर : 20.6%
  विफलता दर : लगभग 15%
  (राष्ट्रीय बोर्ड 6%, राज्य बोर्ड 16%)
- कक्षा XII:
  असफलता दर : राष्ट्रीय बोर्डों पर 12%
  राज्य बोर्डों में 18%

पूर्णता दर: 17 जुलाई, 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया के अनुसार , उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पूर्णता दर 51% है, जो एक बड़ी चिंता का विषय है। यह माध्यमिक शिक्षा के अंत तक छात्रों का समर्थन करने के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

यह उल्लेखनीय है कि यूएसए के नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की अध्यक्षा मार्सिया मैकनट ने अपने हालिया 'स्टेट ऑफ द साइंस' संबोधन में इस बात पर दुख जताते हुए कि अमेरिका अपने वैश्विक वैज्ञानिक नेतृत्व को अन्य देशों को सौंप रहा है, इस बात पर जोर दिया कि इस गिरावट को रोकने के लिए केजी और 12वीं कक्षा के बीच आधारभूत एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) शिक्षा को मजबूत करने पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है [1]।

'हमें अपने स्कूलों में बेहतर शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए' [2] शीर्षक वाले एक हालिया लेख में कहा गया है कि 'अमेरिकी छात्रों को उनके स्कूलों में इंजीनियरिंग की बहुत कम शिक्षा मिलती है और फिर इसमें कहा गया है कि 'पूर्वी बॉस्टन में, ब्रैडली स्कूल ने 2018 से इंजीनियरिंग को अपनाया है। किंडरगार्टन से लेकर आगे तक, छात्र एक अभिनव इंजीनियरिंग–आधारित कक्षा में भाग लेते हैं, जिसमें उन्हें सप्ताह में कम से कम दो बार जूते जैसी तकनीकें डिजाइन करने में शामिल किया जाता है। स्कूल के नेताओं का कहना है कि इससे छात्रों की प्रेरणा और सफलता में काफी सुधार हुआ है, जिसमें राज्य के अंतिम वर्ष के टेस्ट में छात्रों के विज्ञान स्कोर में नौ अंकों की वृद्धि शामिल है।

और फिर, लेखक निम्नलिखित कथन के साथ निष्कर्ष निकालता है: ''इंजीनियरिंग सीखने से बच्चों के विकास और समस्याओं को हल करने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है (उन्हें दृढ़ता सिखाने की बात तो छोड़ ही दें, जो इंजीनियरिंग की व्यवस्थित, पुनरावृत्त प्रक्रिया का एक आवश्यक हिस्सा है)। ''

संकलित एवं संयोजित
— प्रो. वी बी गुप्ता, समन्वयक, डी.ई.आई.–डी.ई.पी.

संदर्भ:

[1] S.S. Iqbal, Scientific American, August 7, 2024
[2] Christine M. Cunningham, Scientific American, June 18, 2024

केंद्र से समाचार

आईसीटी सेंटर, स्वामी नगर, नई दिल्ली में शिक्षक दिवस समारोह मनाया गया

नई दिल्ली के स्वामी नगर स्थित आईसीटी सेंटर में शिक्षक दिवस श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। शिक्षाविद्, दार्शनिक और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन संस्थान प्रार्थना के साथ मनाया गया, जिसके बाद गुरु और ईश्वर की स्तुति में भक्ति गीतों की श्रृंखला प्रस्तुत की गई। गीतों में शिक्षक–छात्र के रिश्ते और गुरु के मार्गदर्शन के महत्व पर प्रकाश डाला गया, जो जीवन भर मदद करता है। छात्रों में से एक ने गुरुओं के प्रति कृतज्ञता, सम्मान और ऋणग्रस्तता व्यक्त करते हुए एक कविता भी सुनाई। इस अवसर पर केंद्र के शिक्षकों, सलाहकारों और प्रशासकों ने भी बात की, जिसमें उन्होंने पिछले और वर्तमान बैचों के छात्रों की कड़ी मेहनत की प्रशंसा की।

कार्यक्रम की योजना, आयोजन, क्रियान्वयन और पर्यवेक्षण विशेष रूप से बी.एड. कार्यक्रम के छात्रों द्वारा किया गया। इसके बाद, केंद्र कार्यक्रम के प्रसारण में भाग लिया दयालबाग एजुकेशनल कॉलेज में आयोजित संस्थान (Deemed-to-be-University) दयालबाग, आगरा –282005, उ.प्र.। अंत में, सभी को नाश्ता परोसा गया।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

आज की तीव्र हिंसा और विनाश की दुनिया में, पृथ्वी और उसके संसाधनों का महत्व समझने और प्रकृति के साथ अपने संबंधों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। जब अंग्रेजी के प्रकृति कवि वर्ड्सवर्थ ने लिखा, ''मेरे लिए सबसे तुच्छ फूल जो खिलता है वह ऐसे गहरे विचारों को जन्म दे सकता है जो आँसुओं से भी व्यक्त न हो सकें", वे प्रकृति और उस शाश्वत, दिव्य आत्मा के बीच सबसे बुनियादी संबंध पर विचार करने की कोशिश कर रहे थे जिसका हम हिस्सा हैं। यहां तक कि आइंस्टीन भी प्रकृति की उपचार शक्तियों और सांत्वना और शांति देने की उसकी क्षमता पर आश्चर्यचकित थे। दयालबाग, वास्तव में 'दयालुता का बगीचा' है, जिसने एक स्थायी कृषि पारिस्थितिकी तंत्र और स्वास्थ्य सेवा आवास विकसित किया है, जिसमें कृषि और डेयरी में सामुदायिक भागीदारी शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण सुनिश्चित करती है। 17 दिसंबर, 2022 को सुश्री उषा विजय कुमार ने एक यात्रा के दौरान दयालबाग के लिए कहा, ''दयालबाग ने मेरी आंखें खोल दीं। मैंने ऐसा समुदाय नहीं देखा जो प्रकृति के मूल सिद्धांतों के अनुसार जीवन जीता हो।''

दयालबाग के कृषि क्षेत्र न केवल प्रकृति के करीब होने का लाभ प्रदान करते हैं, बल्कि संत सतगुरु (दयालु ''प्रशंसित'' वक्त / वर्तमान संत सतगुरु) के साथ हर भक्त के बंधन को मजबूत करने का एक अनूठा अवसर भी प्रदान करते हैं, जो अपने दयालु रूप में हमेशा सुबह और शाम खेतों में विराजमान रहते हैं।

हम अपने पाठकों को aadeisnewsletter@gmail-com पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं और उनसे सुनने के लिए उत्सुक हैं!

खेतों से लेकर फर्मों तक: हारवैस्टिंग के जीवन के सबक कॉर्पोरेट सफलता के लिए

साहिबा उम्मट

बीबीएम (बैच 2014), एमबीए–इंटीग्रेटेड (बैच 2015), डीईआई

वर्तमान में, वरिष्ठ प्रबंधक, विविधता, इक्विटी और समावेशन – डी. ई. शॉ, बैंगलोर

दयालबाग शैक्षणिक संस्थान के पूर्व छात्र के रूप में, मेरी सबसे प्यारी यादें फसल की कटाई तथा अन्य गतिविधियों के मौसम की हैं। "पूर्ण मनुष्य के विकास" का दर्शन वास्तव में दयालबाग के खेतों में सन्निहित है, जहाँ हम, छात्रों के रूप में, धान की कटाई के मौसम के दौरान सेवा में भाग लेते थे। मुझे अभी भी वह दृश्य याद है जब मैं और मेरे दोस्त मिलकर काम करते थे, और "धान की झड़ाई" करते थे, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अनाज को भूसे से अलग किया जाता है। यह एक संतुष्टिदायक अनुभव था – एक साझा लक्ष्य के लिए एक साथ आना, जिससे संतुष्टि की गहरी भावना पैदा हुई।

दयालबाग का कृषि के प्रति दृष्टिकोण पारंपरिक और आधुनिक दोनों है। जैविक खेती के तरीकों को प्राथमिकता दी जाती है, जिसमें रसायनों की जगह खाद जैसे प्राकृतिक उर्वरकों का इस्तेमाल किया जाता है। महिलाओं से लेकर बच्चों और बुजुर्गों तक सभी को अपनी क्षमता के अनुसार काम करने का विकल्प दिया जाता है, ठीक वैसे ही जैसे कॉर्पोरेट करते हैं कि अब संरचनाओं को लोगों की ताकत और सीखने की अवस्थाओं को समायोजित करने के लिए डिजाइन किया गया है। ये सिद्धांत केवल खेती के बारे में नहीं हैं बल्कि चरित्र निर्माण के बारे में भी हैं। इन गतिविधियों में भाग लेना न केवल कृषि में एक सबक है बल्कि अनुशासन, सहानुभूति और लचीलेपन का अभ्यास भी है।

दयालबाग में मेरे अनुभवों और मेरी कॉर्पोरेट यात्रा के बीच एक उल्लेखनीय समानता यह है कि कैसे छोटी उम्र से ही प्रतिभा का पोषण किया जाता है। दयालबाग में, छोटे बच्चों को बड़ों के साथ फसल की पैदावार की उपयुक्त गतिविधियों में जैसे फसल को एकत्र करना इत्यादि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे उन्हें प्रारम्भ से ही लचीलापन, जिम्मेदारी और कड़ी मेहनत का मूल्य सिखाया जाता है। यह तैयारी इस बात को दर्शाती है कि संगठन स्नातक स्तर पर प्रतिभाओं को कैसे तैयार करते हैं, युवा दिमागों को कॉर्पोरेट वातावरण में कामयाब होने के लिए आवश्यक कौशल और मानसिकता से लैस करते हैं। व्यक्तियों को शुरू से ही पोषित करके, चाहे खेतों में हो या पेशेवर सेटिंग में, दयालबाग और निगम अपने भविष्य की सफलता में निवेश करते हैं।

दयालबाग के खेतों में काम करने से कॉर्पोरेट जगत के बारे में मेरी समझ में काफी सुधार हुआ। कटाई, मौसम की अप्रत्याशितता और अनुकूलन की निरंतर आवश्यकता कॉर्पोरेट जीवन की निरंतर बदलती गतिशीलता को दर्शाती है। जिस तरह खेतों में लचीलेपन और टीमवर्क की मांग होती है, उसी तरह कॉर्पोरेट वातावरण भी होता है। दोनों ही जगहों पर बदलाव अपरिहार्य है और इसका विरोध करने से केवल घर्षण ही पैदा होता है मैंने सीखा कि, खेतों की तरह, जब हर कोई एक सामान्य लक्ष्य के साथ जुड़ता है और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अनुकूलन करता है, तो सबसे कठिन चुनौतियां भी प्रबंधनीय हो जाती हैं।

खेतों में, अगर मैं कोई गलती करती, तो हमेशा कोई न कोई मेरा मार्गदर्शन करता रहता, बिलकुल वैसे ही जैसे कॉर्पोरेट जगत में मार्गदर्शन से विकास को बढ़ावा मिलता है। कटाई ने मुझे समग्र विकास का महत्व भी सिखाया। हालाँकि शारीरिक श्रम बौद्धिक कार्य से बहुत दूर लग सकता है, ऐसी गतिविधियों के माध्यम से विकसित मन–शरीर संबंध मानसिक स्पष्टता, एकाग्रता और तनाव प्रबंधन को बढ़ाता है। इन कौशलों ने मेरे पेशेवर जीवन में सहजता से सहयोग किया है, जिससे मुझे ध्यान और संतुलन बनाए रखने में मदद मिली है।

संक्षेप में, दयालबाग के खेतों में मेरे अनुभवों ने मुझे लचीलापन, अनुकूलनशीलता और टीमवर्क की नींव दी, जो कॉर्पोरेट दुनिया में नेविगेट करना आसान बनाता है। यह मुझे याद दिलाता है कि कॉर्पोरेट और कृषि जगत भले ही बहुत अलग लगें, लेकिन वास्तव में दोनों एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, और दोनों के लिए हमें एक समान लक्ष्य की ओर एक साथ बढ़ने की आवश्यकता है।

पारिस्थितिकी–आध्यात्मिकता

डॉ. पंटुला वेंकटनागा श्रीनिजा
मास्टर ऑफ आर्ट्स (धर्मशास्त्र), **DEI**, बैच 2021
वर्तमान में, एमडी (स्कॉलर) होम्योपैथिक बाल रोग, बैक्सन होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज, ग्रेटर नोएडा

पारिस्थितिकी–आध्यात्मिकता का तात्पर्य मानव और पर्यावरण के बीच गहरे आध्यात्मिक संबंधों से है। आध्यात्मिक संबंध तभी बनता है और बना रहता है, जब पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित किया जाता है, और उसकी देखभाल की जाती है। इसी देखभाल के माध्यम से मनुष्य और जिस धरती पर वे रहते हैं, वे आपस में जुड़ जाते हैं। यह समग्र संबंध ग्रह के प्रति सचेतन प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

पारिस्थितिकी–आध्यात्मिकता एक शास्त्रीय अभ्यास है, जो ग्रह पर मानव जीवन की शुरुआत से ही मौजूद है। मनुष्य ने प्रकृति का अवलोकन करके अपने और ब्रह्मांड के साथ अपने संबंधों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। पर्यावरण के जैविक और अजैविक तत्व मानव जाति की निरंतरता के लिए मुख्य आधार बनाते हैं . पर्यावरण आध्यात्मिकता तभी प्राप्त की जा सकती है जब मनुष्य के कार्य समरूप हों, पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा की भावना से निर्देशित हों। पर्यावरण और मनुष्य के बीच आध्यात्मिक संबंध भाषा की सीमाओं से परे हैं। यहाँ विचार और कार्य महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जब जब कोई व्यक्ति आध्यात्मिक अभ्यासों में लिप्त होता है, जो उसकी आत्मा को प्रकृति के साथ जोड़ता है, तो यह पारस्परिक समृद्धि का एक चक्र बनाता है, जिससे व्यक्ति और पारिस्थितिकी तंत्र दोनों को लाभ होता है। यह प्रक्रिया आत्मा को पोषण देती है, और धरती माँ की पवित्रता को संजोती है।

प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्य पेड़ों, जानवरों और जल की पूजा करते रहे हैं। हमने संतों को धरती माता की गोद में ध्यान करते हुए ज्ञान प्राप्त करते देखा है। पर्यावरण के साथ आध्यात्मिक संबंध होने से स्वाभाविक रूप से प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों की रक्षा और संरक्षण की इच्छा पैदा होती है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अच्छा, दयालु, आदरणीय, अनुशासित और कर्तव्यपरायण होना।

दयालबाग की जीवनशैली में पर्यावरण का संरक्षण दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है, जिसमें प्रकृति के सभी तत्वों की सक्रिय रूप से सुरक्षा की जाती है। आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ मिश्रित पारिस्थितिकी तंत्र की सद्भावना और शांति का अनुभव किया जा सकता है। दयालबाग सुनिश्चित करता है कि हवा की गुणवत्ता बनी रहे, पानी की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए नियमित रूप से उपाय किए जाते हैं। इसका मन पर अद्भुत प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही मूल्य आधारित जीवन शैली, नवाचार, पर्यावरण को बचाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग, जैविक खेती के माध्यम से भोजन की गुणवत्ता को बढ़ाना भी शामिल है। दयालबाग में समुदाय के सदस्यों को कृषि गतिविधियों में भाग लेने का अवसर दिया जाता है, इस प्रकार, सबसे बुनियादी तत्व – 'मिट्टी' के साथ बंधन को समृद्ध किया जाता है। सभी वनस्पतियों और जीवों की रक्षा की जाती है और इस प्रकार पर्यावरण और मानवजाति के बीच स्थायी संबंध का एक पूर्ण प्रतिनिधित्व देखा जा सकता है।

यहां। 'स्फीहा', पर्यावरण जागरूकता प्रदान करने वाला एक समर्पित संगठन है, जिसका उद्देश्य जीवन समर्थन पारिस्थितिकी प्रणालियों के स्थायी प्रबंधन के लिए काम करना है जो पर्यावरण और आध्यात्मिक कल्याण के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है।

बौद्ध धर्म में, पेड़ को एक खजाना माना जाता है जो सभी जीवन रूपों का पोषण करता है, दीर्घायु, स्वास्थ्य, सौंदर्य और यहां तक कि करुणा का प्रतीक है। आध्यात्मिक उत्थान में पेड़ों के महत्व को दर्शाते हुए, भूटान के नागरिकों ने 108,000 पेड़ लगाकर अपने नवजात राजकुमार के जन्म का जश्न मनाया व प्रत्येक को प्रार्थना के साथ सील कर दिया गया है। हालांकि एक छोटा सा राज्य, उनके सिद्धांत और जीवन शैली उन लोगों के लिए प्रेरणा है जो इसे देखते हैं। सकल राष्ट्रीय खुशी, देश की एक अनोखी नीति है, जो पर्यावरण संरक्षण और इसके लोगों की भलाई के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करती है।

मासारू इमोटो के पानी के साथ प्रयोगों ने प्रदर्शित किया कि जब वह सकारात्मक कंपन के संपर्क में आता है, तो पानी सुंदर सुडौल और परिपूर्ण क्रिस्टल बनाता है। मानव शरीर में 60: पानी होता है और इसमें ऊर्जा ले जाने का अनूठा गुण होता है। प्रकृति के तत्वों की शक्ति बहुत बड़ी है और यह ऊर्जा बन जाती है और यह भी अधिक शक्तिशाली तब होता है जब सभी तत्व आध्यात्मिक संबंध से मजबूत होते हैं।

संदर्भ

https%//en-wikipedia-org/wiki/Ecospirituality

https%//thediplomat-com/2016/03/bhutan&celebrates&newborn&prince&by&planting&108000&trees/

इमोटो एम. (2004).पानी में छिपे संदेश. न्यूयॉर्क: बियॉन्ड वर्ड्स पब्लिशिंग bad- SPHEEHAGreen बुलेटिन, खंड ii, अंक 3, शरद 2017.

'प्रकृति की विपुलता – फसल कटाई का समय' – एक कविता

प्रिया सिंह
एमबीएम (बैच 1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (बैच 2012), डीईआई
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डीईआई चेन्नई सूचना केंद्र

फसल का समय आ गया, फसल का समय आ गया,
चलो जश्न मनाये, आनंदित होकर जयकार करें
प्रकृति से जुड़ने का – एक मुबारक अवसर है ,
व परम पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का.

सुनहरी छटा से खेत सुशोभित है,
चारों ओर भरपुर उपज है,
पुरुष व महिलाएँ एकत्रित होते हैं,
फसल कटने तक कड़ी परिश्रम करते हैं।

भोर से शाम तक, कटाई वे करते,
फिर थ्रेसिंग करके, भूसी निकालते,
धान, सरसों, मसूर, दाल, गेहूँ,
एक–एक करके फसल हैं कटते।

बच्चों को भी प्रकृति से जुड़कर आता है मजा,
अनाज की बालें चुनकर, परवरिश करना वे सीखते,
बहुत जोश और उत्साह है, लोगो में,
आनंदित होकर वे गाते और नाचते हैं।

फसल का समय मानव समुदाय को एक साथ है लाता,
एकमत होकर काम करना, साथी भाइयों जैसा बनाता,
नहीं है वहाँ वर्ग, पंथ और जाति,
बस है भावनाएं, खुशी, आनंद, और शांति ।

खेत हैं पृथ्वी पर एक महत्वपूर्ण परिदृश्य,
भोजन का एक स्रोत, जब कमी हो इसकी,
लैक्टो शाकाहार जीवनशैली, 1 अरब लोग ने अपनाएं,

खाना खिला सकते हैं, कल '11 अरब' को,
तो आइए, घास के मैदानों की देखभाल और पोषण करें,
भविष्य के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करें।

कौशल संसाधन केंद्र में सम्मान कार्यक्रमः एक रिपोर्ट

पीबी प्रेम दास सत्संगी, सचिव, आरएस सभा को एक विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया जो कौशल संसाधन केंद्र के परिसर में अपने दसवीं और ग्यारहवीं बैचों को सम्मानित करने एवं पुरस्कार प्रमाण पत्र प्रदान करने के लिए आयोजित किया गया था। सितंबर 25, 2024. डॉ. एस. के. सत्संगी, प्रजीडेन्ट आदीन, प्रोफेसर साहब दास, चेयरमैन AADEIs SRC, एएडीईआईएस एसआरसी समन्वय समिति के सदस्य राजेंद्र प्रसाद, और प्रेमी भाई स्वामी दास भी उपस्थित थे। इस अवसर पर उनकी उपस्थिति में एक वीडियो द्वारा पिछले चार वर्षों के एस.आर.सी. की प्रगति की झलक द्वारा विवरण प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने परिसर का भ्रमण किया तथा प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं द्वारा तैयार की जा रही वस्तुओं का निरीक्षण किया तथा प्रशिक्षकों से बातचीत की। एसआरसी की प्रशासक प्रेमिन बहन विनीता श्रीवास्तव ने प्रशिक्षकों का मुख्य अतिथि से परिचय कराया तथा उन्हें वहाँ आयोजित विभिन्न कौशल पाठ्यक्रमों व गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम की शुरुआत "तेरे चरणों में...." प्रार्थना से हुई। डॉ साहब दास ने अतिथियों का स्वागत किया और मुख्य अतिथि प्रेमी भाई प्रेम दास सत्संगी, सचिव आरएस सभा का परिचय कराया। प्रेमी भाई सरन श्रीवास्तव, केंद्र एसआरसी के प्रभारी ने कौशल संसाधन केंद्र के संक्षिप्त इतिहास और प्रगति पर एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। अब तक 319 उम्मीदवारों ने एसआरसी से अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है। इसके बाद, मुख्य अतिथि द्वारा दसवीं और ग्यारहवीं बैच के 60 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र सौंपे गए। मुख्य अतिथि ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की उपयोगिता और लाभ पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त करने से न केवल प्रशिक्षु एक नया कौशल सीखते हैं, बल्कि इससे उनमें आत्मविश्वास भी पैदा होता है, जिससे वे जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

AADEI के अध्यक्ष डॉ. एस के सत्संगी ने भी सभा को संबोधित किया और प्रशिक्षुओं से कहा कि वे एसआरसी में सीखे गए कौशल का अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखते हुए बेहतर उपयोग करें। उन्होंने एसआरसी की पूरी टीम द्वारा किए जा रहे अच्छे काम की भी प्रशंसा की, जो कि इस कार्यक्रम में परिलक्षित होता है। कार्यक्रम का समापन कई प्रशिक्षुओं द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में अपने अनुभव साझा करने के साथ हुआ। उन्होंने अपने गुरुओं और एसआरसी की पूरी टीम को भी धन्यवाद दिया।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक
प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक
डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य
डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक
डॉ. नमस्या
डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक
प्रो. सी. पटवर्धन
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक
प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति
डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ.बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय:
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002
पंजीकृत कार्यालय:
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्क II,
नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन: दयालबाग़ प्रेस